भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व० चन्द्रशेखर जी का जीवन परिचय

रुद्र प्रताप सिंह
कृषि विज्ञान केंद्र, कोटवा, आजमगढ़ (उ०प्र०)

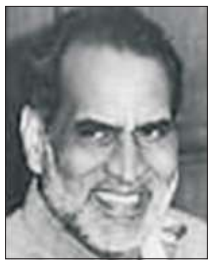

स्व० चन्द्रशेखर जी का जन्म उत्तर प्रदेश में बलिया जनपद के एक छोटे से गाँव इब्राहिम पट्टी में क्षत्रिय कुल में 17 अप्रैल 1927 को हुआ था। उनके पिता का नाम सदानंद सिंह तथा माता का नाम द्रौपदी देवी था। पिता अत्यंत कड़क स्वभाव के परन्तु माँ अत्यंत ही ममतामयी तथा धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। चन्द्रशेखर जी का विवाह जून 1944 में द्विजा देवी से संपन्न हुआ। कम उम्र में ही 1947 में माँ का निधन हो गया। प्रारंभिक शिक्षा गाँव से हुई, स्नातक 1949 में सतीश चंद कालेज, बलिया तथा परा स्नातक राजनीति शास्त्र विषय में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1951 में उत्तीर्ण किया। इसी वर्ष शोधकार्य के दौरान आचार्य नरेन्द्र देव के कहने पर बलिया जिला में सोशलिस्ट पार्टी के मंत्री बने। 1955 में प्रदेश महामंत्री बने तथा राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में आगमन उत्तर प्रदेश राज्यसभा में प्रवेश करने के बाद हुआ। 1962 में चंद्रशेखर जी को सोशलिस्ट पार्टी द्वारा राज्यसभा का टिकट मिल गया। यहाँ से उन्होंने उच्च राजनीति का आरम्भ किया। 1964 में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की तथा 1967 में कांग्रेस संसदीय दल के मंत्री बने। 1969 में कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य बनाये गए, 1972 में हाईकमान के निर्देश के विरुद्ध लड़ कर शिमला अधिवेशन में चुनाव समिति के सदस्य चुने गए। 26 जून 1975 में आपातकाल के दौरान जब इन्दिरा गाँधी ने कई राज नेताओं को जेल भेजा, उनमें चंद्रशेखर जी का नाम भी शामिल था, वहां वो 19 माह तक रहे। 1977 में जनता दल के अध्यक्ष बनाये गए, उसी वर्ष उत्तर प्रदेश के बलिया की लोकसभा सीट पर चुने गये। इन्होंने दक्षिण के कन्याकुमारी से दिल्ली के राजघाट तक हुई पद यात्रा जिसे बाद में भारत यात्रा भी कहा गया, उसमें हिस्सेदारी की। 4260 किलोमीटर की पद यात्रा को 10 जनवरी 1983 से शुरू कर 25 जून 1983 को समाप्त किया गया। भारत यात्रा का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं पर प्रकाश डालना और सामाजिक असमानताओं और प्रचलित जातिवाद की असमानताओं को दूर करना था। नवंबर 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के पतन के बाद राजीव गाँधी की मदद से चंद्रशेखर जी 10 नवंबर 1990 को प्रधानमंत्री बने। लेकिन कुछ समय बाद ही वी पी सिंह ने जनता दल से अलग समाजवादी पार्टी बना ली। जिसके बाद चंद्रशेखर को बीजेपी के द्वारा बहुमत मिला। हालाँकि ये बात राजीव गाँधी को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने कुछ समय बाद चंद्रशेखर जी की सरकार से बहुमत वापस ले लिया। जिसके साथ मार्च 1991 में चंद्रशेखर जी की सरकार गिर गई, और उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। चंद्रशेखर जी कुल 7 बार लोकसभा के सदस्य रहे तथा उनको 1995 में उत्कृष्ट सांसद के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार की शुरुआत भी इसी वर्ष हुई थी, अतः चंद्रशेखर जी पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें ये सम्मान प्राप्त हुआ था।

चंद्रशेखर जी अद्भुत व्यक्तित्व के धनी थे, भाषा शैली अनुपम तथा उसमें इतनी सच्चाई और दृढता की कोई बात न काट सके। पक्ष हो या विपक्ष वो सभी के लिए सम्मानीय एवं सभी को मार्ग दर्शन देते थे क्यूंकि उनमें निजी स्वार्थ का भाव था ही नहीं। चंद्रशेखर जी युवाओं के लिए प्रेरणा के प्रतिबिम्ब रहे, उन्होंने युवाओं को जगाने का भरपूर प्रयास किया। उनका मानना था, "युवा को शक्ति मानने वाला ही, देश को एक स्वस्थ्य प्रगति की तरफ बढ़ाता है, क्यूंकि उसमें स्वहित के बजाय राष्ट्र के कल्याण का भाव होता है।" उनके विचारों में बहुत गहराई थी जिसे उन्होंने अपने लेखन के जरिये उजागर किया। उस समय विचारों की अभिव्यक्ति सामान्यतः पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही किया जाता था। यह एक बहुत प्रभावशाली तरीका होता था। चंद्रशेखर जी ने "यंग इंडिया" नामक समाचार पत्र का सम्पादन किया, समाचार पत्रों में वह जनता को जगाने वाली शैली अपनाते थे, इसलिए वह बौद्धिक वर्ग में भी प्रिय रहे। वह बेखौफ और निष्पक्ष नेता थे, जिन्होंने कलम को अपना हथियार बनाया और क्रांति का आह्वाहन किया। जेल में प्रवास के दौरान उन्होंने अपने विचारों और आप बीती को एक डायरी में संग्रहित किया, जो बाद में "मेरी जेल" के नाम से प्रकाशित की गई। "डायनमिक्स ऑफ चेंज" नामक पुस्तिका के रचयिता भी थे, जिसमें इनके विचारों और यंग इंडिया के इनके अनुभवों को भी प्रकाशित किया गया। इनके लेखन में एक प्रकार का भाव होता था, जो पाठक को शुरु से अंत तक बांधे रखता था। चंद्रशेखर सिंह का राजनैतिक जीवन एक स्वच्छ दर्पण की तरह है। सर्वप्रथम वे समाजवादी आंदोलनों से जुड़े, पिछड़े वर्गों के लोगों के लिए बहुत से कार्य किये तथा दलितों को सामान्य जीवन दिलाने की लड़ाई में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही चंद्रशेखर जी ने अन्य सामाजिक धर्मों की भावनाओं का भी ध्यान रखना भी अहम् समझा ताकि किसी तरह की हिंसा का मुख न देखना पड़े। अहम् मुद्दों पर आवाज बुलंद करना चंद्रशेखर जी के व्यक्तित्व में शामिल था। उनकी दमदार आवाज, वेबाक बोलने की आदत काफी प्रभावशाली थी। बहुत वक्त बाद भारत को एक ईमानदार और कर्मवान हाथों ने सम्भाला था, उनके इन्ही गुणों के कारण वो निष्पक्ष भाव से प्रेम पाते भी थे। प्रधानमंत्री पद से हटने के बाद वे भोड़सी में अपने आश्रम में रहे, इनसे इनकी पार्टी के अलावा विपक्षी भी सलाह करते थे। वह अपने करीबियों से एक शेर अक्सर कहा करते थे –

मैदाने इन्तहां से घबरा के हट न जाना, तकमील ज़िंदगी है चोटों पे चोट खाना।
अब अहलेगुलिस्तां को शायद हो न शिकायत, मैंने बना लिया है काटों में आशियाना।।

चंद्रशेखर जी को बोनमेरो कैंसर था, तबियत ख़राब होने के चलते उन्हें 3 मई 2007 को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। 8 जुलाई 2007 को अपोलो अस्पताल में उन्होन`अंतिम सांस ली, उस वक्त उनकी उम्र 80 साल थी।

चन्द्रशेखर जी की कर्मठता तो प्रभावशाली थी ही, साथ ही वह चरित्र के भी धनी थे। देश का स्वाभिमान एवं सम्मान दोनों ही उनके कंधे थे तभी ता`सोने की चमक भी उन्हें विचलित न कर सकी। अपने कर्मो एवं स्वभाव के कारण वह सदैव स्मरणीय रहेंगे।

श्री यशवंत सिंह एक अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं तथा वर्तमान में उ०प्र० विधान परिषद् के सदस्य हैं। श्री सिंह ग्राम अल्देमऊ पो० सरौंदा जनपद मऊ (उ०प्र०) के निवासी हैं तथा पूर्व में उ०प्र० सरकार में राज्य मंत्री, दो बार विधान परिषद् सदस्य व दो बार विधायक रह चुके हैं। आजमगढ़ जनपद में श्री चन्द्रशेखर जी स्मारक ट्रस्ट की स्थापना करके वह चन्द्रशेखर जी की समाजवादी विचार धारा से जनता को अवगत कराने में लगे हुए हैं। रासा इसके लिये उनका आभार व्यक्त करता है।